अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वायुकाय के देशबंध की जघन्य स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 1 अन्तर्मुहूर्त्त

(ग) एक क्षुल्लक भव में 3 समय कम (घ) एक मुहूर्त्त ( )

(b) वैक्रिय के समुच्चय जीव के सर्वबंध की उत्कृष्ट स्थिति है-

(क) 1 समय (ख) 2 समय

(ग) 33 सागरोपम में 1 समय कम (घ) अन्तर्मुहूर्त्त ( )

(c) जो काय गुप्ति से रहित होता है, वह है-

(क) पुलाक (ख) बकुश

(ग) प्रतिसेवना कुशील (घ) कषाय कुशील ( )

(d) बकुश साधु होते हैं-

(क) तीर्थ में (ख) अतीर्थ में

(ग) तीर्थ-अतीर्थ में (घ) दोनों में नहीं ( )

(e) परिहार विशुद्ध चारित्र में शरीर पाये जाते हैं-

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5 ( )

(f) परिहार विशुद्धि संयत होते हैं-

(क) मूलगुण प्रतिसेवी (ख) उत्तरगुण प्रतिसेवी

(ग) अप्रतिसेवी (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(g) शाश्वत गुणस्थान नहीं है-

(क) पहला (ख) दूसरा

(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ ( )

(h) देवता में पदवी पायी जाती है-

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार ( )

(i) वैताढ्य पर्वत के मूल में उत्पन्न होता है-

(क) मणिरत्न (ख)श्रीदेवी

(ग) घोड़ा (घ) काकिणी रत्न ( )

(j) कर्म वेदते हुए वेदे के भंग हैं-

(क) 453 (ख) 6

(ग) 42 (घ) 696 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) एक मुहूर्त्त में होने वाले अधिकतम क्षुल्लक भवों की संख्या 65526 है। ( )

(b) आहारक शरीर 1 भव में दो बार व सम्पूर्ण संसार काल में 4 बार से अधिक नहीं होता है। ( )

(c) प्रतिसेवना कुशील काल करके उत्कृष्ट आठवें देवलोक में जाता है। ( )

(d) निर्ग्रन्थ और स्नातक में संयम स्थान असंख्यात होते हैं। ( )

(e) सूक्ष्म संपराय संयत में साकार उपयोग ही होता है। ( )

(f) यथाख्यात संयत में हीयमान परिणाम नहीं होता है। ( )

(g) पाँच स्थावर में निरन्तर आयु बंधक होते हैं। ( )

(h) एक कर्म के बंधक गुणस्थान 10,11,12,13 हैं। ( )

(i) मांडलिक राजा की अवगाहना जघन्य 2 हाथ होती है। ( )

(j) 6 खण्डों के बीच के दोनों खण्डों को चक्रवती का सेनापति जीतता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अशबल	(क) 7000 वर्ष	.....
(b)	अप्काय	(ख) निर्विश्यमान	.....
(c)	परिहार विशुद्धि चारित्र	(ग) चार हाथ लम्बा	.....
(d)	वनस्पतिकाय	(घ) दोष रहित	.....
(e)	पलिभाग	(च) चार अंगुल लम्बा	.....
(f)	कालास्यवेषीय पुत्र	(छ) समान काल	.....
(g)	दण्ड रत्न	(ज) गांगेय अणगार	.....
(h)	चर्म रत्न	(झ) 10 हजार वर्ष	.....
(i)	घोड़ा रत्न	(य) दो हाथ लम्बा	.....
(j)	मणिरत्न	(र) एक सौ आठ अंगुल लम्बा	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2=(20)**

(a) मैं जघन्य नवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का अध्ययन करता हूँ। .....

(b) असंख्यात लोकों में जितने आकाश प्रदेश होते हैं, उतने मेरे स्थान होते हैं।.....

(c) मैं वीर्यान्तराय कर्म से उत्पन्न शक्ति हूँ। .....

(d) मैं सबसे छोटा 256 आवलिका का भव हूँ। .....

(e) हम द्रव्य तथा भाव दोनों की अपेक्षा स्वलिंग में ही होते हैं। .....

(f) मैं स्वजातीय-परजातीय चारित्र की पर्यायों के साथ संयोजन करने पर होता हूँ। .....

(g) मैं अबन्धक गुणस्थान हूँ। .....

(h) मेरा वेदन 10वें गुणस्थान तक ही होता है। .....

(i) मैं विद्याधरों की उत्तर की श्रेणी में उत्पन्न होने वाला रत्न हूँ। .....

(j) मैं ऐसा रत्न हूँ कि मेरी अवगाहना चक्रवती से दुगुनी होती है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2=(18)**

(a) देव में वैक्रिय शरीर के देश बंध की स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

(b) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में वैक्रिय शरीर के देशबंध का अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

(c) निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(d) **पुलाक साधु में उपसम्पद्हान द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **बकुश साधु आहारक लब्धि का प्रयोग क्यों नहीं कर सकते हैं ?**

.....

.....

.....

(f) **निर्ग्रन्थों में अनेक भवों की अपेक्षा आकर्ष लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **एक जीव की अपेक्षा पुलाक साधु का काल अन्तर्मुहूर्त्त क्यों बताया है ?**

.....

.....

.....

(h) **छेदोपस्थापनीय संयत में परिणाम लिखिए और उनकी स्थिति लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **'यथाख्यात संयत' यथाख्यात चारित्र को छोड़कर सीधा कहाँ-कहाँ जाता है ?**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई 8) **8x4=(32)**

(a) **वेदनीय कर्म बांधता हुआ समुच्चय जीव कितने कर्म वेदता है ? भंग भी लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **पाँचों शरीरों के देशबंध, सर्वबंध और अबंध की शामिल अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **औदारिक शरीर के समुच्चय जीव के सर्वबंध का अन्तर काल लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **पुलाक को अन्य लिंग, गृहस्थ लिंग में किस अपेक्षा से समझना चाहिए ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **पाँचों संयतों में चारित्र-पर्याय की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **परिहार विशुद्धि संयत का जघन्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **पुलाक लब्धि वाला पुलाकपने में काल नहीं करता तो फिर उसकी गति किस अपेक्षा से बतलाई है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **पाँच संयतों में पूर्व प्रतिपन्न की अपेक्षा परिमाण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **परिहार विशुद्धि संयत का उत्कृष्ट काल 58 वर्ष कम दो करोड़ पूर्व वर्ष किस अपेक्षा से है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....